



समाचार एवं विचार सेवा

वार्षिक सहयोग राशि 25/-

# महाकौशल-संदेश

वर्ष:- 2019-20

पृष्ठ:- 4

अंक :- 11 संपादक :- डॉ. किशन कछवाहा

RNI No. MPHIN/2001/11140

यह सामग्री 'प्रकाशनार्थ' प्रेषित है। कृपया अपने लोकप्रिय पत्र-पत्रिका में प्रकाशित कर Complimentary कापी प्रेषित करने की अनुकम्भा करें।

## ऐतिहासिक दूसरी पार्नी

देश की आशाओं की दीप - मोदी मंत्रिमंडल - **डॉ. किशन कछवाहा**

भारत के इतिहास में गैर कॉग्रेसी प्रधानमंत्री के रूप में दूसरी बार सत्ता में आने वाले नरेन्द्र दामोदर दास मोदी ने शपथ लेते हुए कहा कि 'मैं संविधान व विधि के अनुसार न्याय करूँगा। मोदी सहित 58 मंत्रियों ने शपथ ली। इनमें 24 केबिनेट मंत्री, 9 राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) 24 राज्य मंत्री, 6 महिलाओं को भी अवसर प्राप्त हुआ है।'

यह देश के 16वें प्रधानमंत्री के रूप में शपथ थी। बहुचर्चित भाजपा अध्यक्ष अमित शाह के केन्द्रीय मंत्रिमंडल में शामिल होने के बाद नये पार्टी अध्यक्ष को लेकर चर्चायें जोरों पर हैं।

सबसे चौका देने वाली बात यह रही कि 36 साल अपनी विदेश सेवा में तैनाती के बाद चीन में भारतीय राजदूत रहे एस. जयशंकर को भी मोदी मंत्रिमंडल में शामिल किया गया है। बताया जाता है कि डोकलाम विवाद सुलझाने में उनकी अहं भूमिका रही है।

इस दूसरे कार्यकाल में भी मोदी सरकार के पहले कार्यकाल में काम कर चुके उन्हीं बड़े चेहरों को उनकी प्रशासनिक योग्यता और अन्य समीकरणों के चलते प्रमुखता मिली है। अधिकतर पुराने चेहरों पर भरोसा जताया गया है।



© Reuters/A. Abidi

## बंगाल में हिंसा परास्त

पश्चिम-बंगाल में भाजपा का लोकसभा चुनाव में भारी हिंसा, आगजनी, गॉलीबारी, हत्या, हिंसक हमलों आदि से न डरते हुए राज्य की जनता ने भारतीय जनता पार्टी को अभूतपूर्व सफलता दिलाकर ममता बनर्जी को कड़ा सबक सिखाया।

भाजपा ने इस बार ममता बनर्जी के बोट बैंक में जबरदस्त सेंध लगाते हुए कुल 42 लोकसभा सीटों में से 18 सीटों पर जीत हासिल की। साथ ही बोट प्रतिशत में भी 23.1 प्रतिशत के उछाल के साथ ही तृणमूल कांग्रेस से सीधे 16 सीटें अपने पास झटक लीं। दार्जिलिंग व आसनसोल लोकसभा सीटों को भाजपा ने फिर से जीतकर बता दिया कि राज्य की जनता अब उसके साथ है।

दृष्टि से बहुत ही सघन है, में 34 लोकसभा सीटों में से 11 पर भाजपा ने सफलता प्राप्त की है।

**क्या मायने हैं भाजपा की जीत के** – वामपंथी शासन ने दमन के बाद प्रदेश की जनता ने इससे छुटकारा पाने के लिए 2011 के विधानसभा चुनावों में माकपा को नकारते हुए ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस को सत्ता की बांड़ेर सौंपी और ममता बनर्जी मुख्यमंत्री बनी। लेकिन राज्य के लोग जिससे छुटकारा चाहते थे, उसे ममता और तृणमूल पार्टी के गुंडों ने और बढ़ाया। चाहे बात बांग्लादेशी घुसपैठियों को बसाने की हो या फिर मुस्लिम तुष्टीकरण की। सभी जगह ममता का चाल-चरित्र और चेहरा सामने दिखा। तृणमूल ने इसी को अपना बोट बैंक बनाया और राज्य में एक

तरह से अराजकता का वातावरण बनाने का भरसक प्रयास किया। इससे बहुसंख्यक हिन्दुओं में ममता के विरुद्ध नाराजगी पैदा हुई। राज्य के हिन्दुओं को यह भान हो गया की तृणमूल की नीतियां तो माकपा से भी ज्यादा खतरनाक है। यहां तक कि प्रदेश के विकास के गम्भीर विषय जैसे-शिक्षा, स्वास्थ्य व रोजगार पर भी ममता तनर्जी ने माकपा से भी कम काम किया। उल्टे एक सिंडिकेट और खड़ा कर दिया, जिसने नियुक्तियों में खूब धांधली की। इस सबसे ऊबकर राज्य की जनता ने भाजपा पर विश्वास जताया और लोकसभा चुनाव में तृणमूल और माकपा को नकार दिया और 18 सीटों पर जीत दर्ज की।

## भारत का गौटम पिटर लौटेहा – डॉ. किशन कछवाहा

देश के इन तीन अवसरों को मैं अभूतपूर्व मानता हूँ। पहला — गंगा जी की आरती में बनारस में जापानी प्रधानमंत्री के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का शामिल होना, दूसरी—जिस कुम्भ में देश—दुनिया के 25 करोड़ लोग समिलित हुये उसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा भी डुबकी लगाना, तीसरा—केदारनाथ—बद्रीनाथ के मंदिरों में दर्शन तथा 17 घंटों तक ध्यान लगाकर बैठना।

इससे दूर—दूर तक संदेश गया कि पहली बार भारत में एक हिन्दू प्रधानमंत्री भारतीय संस्कृति की पुरातन ध्वजा को अपने हाथों सम्हाले हुये हैं। सन् 2014 के आम चुनावों में एक चायवाले के बेटे को प्रधानमंत्री की कुर्सी तक पहुंचा देना एक बड़ा चमत्कार था, भारतीय लोकतंत्र का। लोकतंत्र का असली मतलब भी। पहली बार विषय को अपने कमज़ोर होने का अहसास हुआ था इसलिये इस सन् 2019 के चुनाव के लिये तमाम उम्मीदें जोड़ रखना मजबूरी बन गयी थी, लेकिन भीतर — भीतर राग कुछ और चल रहा था। फिर भी मीडिया के एक वर्ग को साधाकर कुछ महीनों तक लगातार यह कोशिशें होती रही कांग्रेस नेताओं की कि राहुल गांधी को एक योग्य और सामर्थ्यवान नेता के रूप में पेश किया जाय। इसके लिये मध्यप्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ को अपनी जीत के लिये सशक्त ढिढ़ौरा पिटवाया गया। इस आशा की किरण को सूरज की तेज रोशनी जैसा घोषित करने से भी परहेज नहीं किया गया। इस अभियान के लिये नरेन्द्र मोदी को तरह—तरह से बदनाम करने के कुचक्रों का सहारा लिया गया। कभी कभार हुये दंगे—फसादों, गौरक्षकों की आपसी झड़पों को दलितों और मुसलमानों के साथ हुए अत्याचारों की फेहरिस्त बनाकर हमले किये गये। यद्यपि इस तरह से मोदी को बदनाम करने के नुस्खे गत पांच वर्षों में अनेकों बार काम में लाये जाते ही रहे हैं। कभी देश को बांटने का, कभी रफाल चोरी का, तो कभी लोकतांत्रिक संस्थाओं को कमज़ोर करने का कभी कोई मुद्दा छूट गया तो इतिहास से छड़छाड़ की बहुरंगी आरोप तो

इसने सेकुलर ताकतों का सहयोगी अभियान बना ही रहा।

विपक्षी कांग्रेस की सबसे बड़ी समस्या यह रही है कि उसका कई दशकों से देश के अधिकांश हिस्सों से जमीनी संपर्क टूटा हुआ था जिस पर एअर कडीशन संस्कृति में लम्बरदारों ने कभी ध्यान नहीं दिया। इसके लिये संगठन पर ध्यान देना होता है और सड़कों—गलियों की खाक छानना पड़ती है। इसमें पसीना बहाने के लिये कांग्रेस नेता क्या, कांग्रेस कार्यकर्ता भी तैयार नहीं थे।

**कांग्रेस अध्यक्ष** “चौकीदार चोर” का नारा लगाने में इतने आत्ममुग्ध थे कि उन्हें पता ही नहीं चल पाया कि जिस कुलहाड़ी का वे उपयोग कर रहे हैं, उससे उनके पैर को ही चौट पहुंच रही है। इस नारे ने कांग्रेस के जमीनी आधार को ही बहुत अधिक नुकसान पहुंचाया। इतना कि आगे आने वाले वर्षों में भी इसकी क्षतिपूर्ति सम्भव नहीं है।

कांग्रेस नेता इस तथ्य से भी अवगत नहीं हो सके कि मोदी सरकार की योजनाओं के कारण ग्रामीण भारत के लोग कितने लाभान्वित हो रहे हैं? सड़कें ही नहीं बनी, गैस कनेक्शन, बिजली कनेक्शन पक्के मकान, शौचालय और स्कूल भी बने। इनसे एक और जहां मोदी की लोकप्रियता बढ़ रही थी, वहीं “चौकीदार चोर का” नारा कांग्रेस की जमीन दरका रहा था। असल काम जिसका उल्लेख किया जाना चाहिये कि टी.वी. चैनलों में कांग्रेस या विषय के बुद्धिजीवियों ने जिस नफरत और जहरीले किस्म के बोल बोले उससे भी आम लोगों में विषय के प्रति घ्रणा का भाव पैदा हुआ है।

आजाद देश के इन 70 वर्षों में ‘धर्म निरपेक्षता’ शब्द को लेकर जिस तरह का सत्ता के मद में दुरुपयोग किया गया, उसके कारण ‘हिन्दुत्व’ और ‘राष्ट्रवाद’ की ओर झुकने के लिए देश की जनता मजबूर हुयी है। दूसरी ओर दलित, आदिवासी, बंटाईदार या खेती करने वाले मजदूर, खेतिहर मजदूर और भी इसी प्रकार के कुछ वर्ग हैं, जिन्हें यह महसूस

हो रहा था कि उनकी उपेक्षा हो रही है। उन्हें मोदी सरकार के ‘सबका साथ—सबका विकास’ नारे ने उन्हें राहत पहुंचाई, आशा की किरण जगायी है। उन्हें यह भी समझ में आया है कि मोदी सरकार की योजनायें जाति, गरीबी, अशिक्षा और बुढ़ापे के लिये मददगार साबित होंगी।

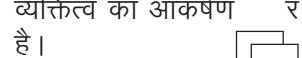
इस चुनाव में कांग्रेस के वंशवाद को भी गहरी चोट पहुंची है। कुछ क्षेत्रों का तो निजी जायदाद की तरह के उपयोग किया जाता रहा है, अब वह भ्रम टूटा है। कांग्रेस के आधे से ज्यादा शूरमा और नौजवान सांसद जो किसी न किसी प्रभावी पिता के पुत्र होने के कारण मैदान में थे, हार गये हैं। राजा महाराजाओं की श्रृंखला में जाने—माने चेहरे ज्योतिरादित्या सिंहिया और दिग्विजय सिंह भी चुनाव हार गये हैं।

देश की जनता ने मोदी सरकार को एक और पांच वर्ष का कार्यकाल पर पूर्व के वर्षों की तरह मोदी सरकार पर अपना विश्वास व्यक्त किया है। यह आशा बंधी है कि पांच वर्ष भी प्रभावशाली और जनहित की कसौटी पर खरे उतरेंगे। उनका चुनाव के बाद का पहला भाषण जन—जन के दिल को छू गया है जिसमें उन्होंने अपना यह “संकल्प” दुहराया है कि ‘मैं अपने लिये कोई कार्य नहीं करूँगा।’ पिछली सरकार के कार्यकाल के दौरान सरकार के द्वारा शुरू किया गया ‘स्वच्छता—अभियान’ भी अभूतपूर्व था। सरकार के कामकाज से भारत का गौरव फिर से लौटता दिखाई देने लगा है। आशा है उसे और पंख लगेंगे।

मोदी के संकल्प स्तुत्य हैं। उनका मानना है कि यह जनादेश केवल राजनीति के लिये नहीं है, कण—कण, पल—पल देशवासियों के लिये समर्पित है। पहले उद्बोधन में उच्चकोटि के भारतीय दर्शन के सिद्धान्त ही प्रगट हुये हैं। वे ही बादे हैं जो सार्वजनिक रूप से स्वीकार कर लिये जाते हैं। अद्भुत साहस के प्रतीक बन गये हैं। यह अपने आप में विलक्षण ही है कि ‘सरकार बहुमत से नहीं सर्वसम्मति’ से चलती है। यह ऐसा संकल्प है जिस पर सच्चाई की छाप लगी है।

कुछ लोगों को विशेष कर उस वर्ग को यह विजययात्रा अच्छी न लग पाना स्वाभाविक है, जो अब तक नेहरू—गांधी—वाड्वा परिवार की अंधभक्ति में तल्लीन रहे हैं वह भी समाजवाद, सेक्यूरिज्म और उदारवाद तथा कथित छद्म छत्र को लेकर चलते रहे हैं। अब यह आशंकित वर्ग अपने को कमज़ोर और हताश महसूस कर रहा है। इन अंग्रेजीदौ लोगों का काम और धाम चालाकी पूर्ण रहा है। माने या न माने, भारत अब बदल गया है। वह स्थान जहां वे स्थापित थे, वह कभी नहीं मिलने वाला। परिवारवाद और राजवंशों की नींव दरकने लगी है। मोदी पर वार पर वार हुये, वे सब बेअसर रहे इसलिये इस वर्ग का हाल बेहाल है। उन्हें यह जीत कैसे अच्छी लग सकती है? इस चुनाव में विषय की (कांग्रेस) सहित हार—हताशा उनका साहस तोड़ देने वाली सिद्ध हुयी है। परिवार वाद पर लग रहे आरोप नये नहीं हैं।

15 साल पहले कांग्रेस के बुराड़ी अधिवेशन में एक प्रस्ताव रखा था जिसका स्मरण वे स्वयं अध्यक्ष बनते समय नहीं रख सके। दूसरी तरफ जिस विषयक ने विरोध व्यक्त करते समय प्रधानमंत्री के लिये अपशब्दों मिश्रित वाक्यों का प्रयोग किया गया जिसमें मर्यादा और शालीनता का भी ध्यान नहीं रखा गया। उसी प्रधानमंत्री का आज विश्वभर में डंका बज रहा है। दुनिया भर के प्रख्यात राजनेताओं ने बधाई दी है। सभी ने इस प्रभावशाली जीत माना है। मोदी तूफान से जूझे और विषय की धूणा, अहंकार, अराजकता और अमानवीयता को चुनौती देकर परास्त किया। इसके बावजूद प्रधानमंत्री ने चुनाव अभियान को एक बड़ी तीर्थयात्रा निरूपित किया। सारा श्रेय जनता जनार्दन और बड़े—बुजुर्गों की तपस्या को दिया। वहीं यह भी सच है कि इस आश्चर्य चकित कर देने वाली जीत के पीछे भाजपा के करोड़ों कार्यकर्ताओं की अथक मेहनत और समर्पित परिश्रम के साथ—साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का विनम्र, विराट और चमत्कारी व्यक्तित्व का आकर्षण रहा है।



## देशभक्ति - राष्ट्रभाव - भारतीयता

गत कुछ वर्षों से भारत सहित पूरे विश्व में, राष्ट्रवाद की भावना उभरी है, जिसने कई तरह की मुश्किलें भी पैदा की हैं। इस नए तरह के राष्ट्रवाद ने जाने—अनजाने अथवा चाहे—अनचाहे, लोगों को विदेशियों का विरोधी बनाया है और अपनी सीमाओं को बंद करने की कोशिश की है। यह राष्ट्रवाद अप्रवासियों के खिलाफ है। इसमें मुक्त व्यापार का विरोध है। यह राष्ट्रवाद विश्व इतिहास के बीते सात दशकों की उस शानदार विरासत का नष्ट करने पर आमादा है, जिसने दुनिया को समृद्धि एवं शांति दी है। भारत में इस राष्ट्रवाद ने लोगों को भारतीय बनने पर कम, बल्कि हिन्दू, मुस्लिम, बौद्ध, ईसाई या फिर दलित बनने पर ज्यादा जोर दिया है।

हम सब अपनी साधारण बातीयत में प्रायः दो शब्दों—राष्ट्रवाद और देशभक्ति को लेकर भ्रमित होते रहते हैं। हममें से अनेक, अक्सर इन दोनों शब्दों का प्रयोग एकदूसरे के बदले करते रहते हैं। हालांकि ऐसा करते हुए हम भूल जाते हैं कि ये दोनों शब्द समानार्थी नहीं हैं। यदि हम इक्कीसवीं सदी में एक भारतीय की दुविधा को समझना चाहें तो इन दोनों शब्दों के अंतर को समझना जरूरी है। एक देशभक्ति अपने देश, वहाँ की जीवनपद्धति, उसकी उपलब्धियों और उसके इतिहास व संस्कृति से प्यार करता है, लेकिन वह अपने विचार, अपने मत किसी पर नहीं थोपता। एक राष्ट्रवादी का मन भी अपने देश से प्यार करता है, लेकिन वह शक्ति व प्रतिष्ठा की अहंता से परिचालित होता है। कहीं—न—कहीं, किसी—न—किसी कोने में उसकी मंशा—अपने विचार व अपने मत के वर्चस्व को स्थापित करने की बनी रहती है। वह अपनी जीवनपद्धति को दूसरों पर थोपना चाहता है।

आजादी से पहले देश में एक अलग ढंग की भावनाओं की बयार बहा करती थी। उस समय फिजाओं में देशभक्ति के तराने गूंजा करते थे। भारत का जन्म सन् 1947 में हिटलर, स्टालिन, माओ जैसे तानाशाह शासकों की परछाई में हुआ, जो राष्ट्रवाद की भावना से ओत—प्रोत थे और वर्चस्व की मानसिकता से संचालित थे। इसके

विपरीत भारत का निर्माण ऐसे संतों की छत्रछाया में हुआ, जिन्होंने देशवासियों को वास्तविक देशभक्ति का पाठ पढ़ाया। वे हमें भारतीय बनाना चाहते थे, न कि हिन्दू मुस्लिम अथवा सिख, ईसाई। जर्मनी में हिटलर, रूस में स्टालिन और चीन में माओ ने राष्ट्रवाद के नाम पर लाखों लोगों की हत्या की, जबकि महात्मा गांधी की देशभक्ति ने बिना खून बहाए हमें आजादी दिलाई।

इधर पिछले कुछ सालों में दोनों शब्दों के बीच भ्रम की स्थिति ने दुनिया को काफी नुकसान पहुंचाया है। ब्रिटेन में राष्ट्रवादियों ने देशभक्ति के नाम यूरोपीय संघ से अपने देश को जोरदार ढंग से बाहर निकाल दिया। अमेरिका के राष्ट्रपति चुनाव में कुछ एक प्रत्याशियों ने इस राष्ट्रवाद के मुद्दे को खूब उठाया। भारत में भी कुछ ऐसी ही स्थिति पनपी। राष्ट्रवादियों ने कई ढंग से वैमनस्य पैदा करने की कोशिश की। हर छोटे—बड़े विरोध को देशद्रोह का नाम देने का प्रयास किया। हालांकि यह सच है कि राष्ट्रवादी एवं देशभक्त, दोनों सफल व सशक्त भारत चाहते हैं, लेकिन देशभक्त—अल्पसंख्यक सहित सभी भारतीयों की सफलता चाहते हैं; जबकि राष्ट्रवादियों की सोच का दायरा संकुचित व संकीर्ण है। एक राष्ट्रवादी अपने विचारों व मतों को लेकर बहुत आग्रही हो जाता है; जबकि देशभक्त अपने देश से प्यार करने के बावजूद आग्रही न होकर व्यापक होता है।

हम सामान्यतया राष्ट्रवाद को सकारात्मक रूप में लेते हैं, लेकिन इसके साथ यह भी सच जुड़ा हुआ है कि इसने विश्व इतिहास में पर्याप्त हानिकारक भूमिका निभाई है। 19वीं सदी में यूरोपीय राष्ट्रवाद ने एशिया और अफ्रीका में कई देशों को गुलाम बनाया। 20वीं सदी में राष्ट्रवाद दो विश्वयुद्धों का कारण बना। हिटलर की मानसिकता ऐसे ही कलुषित राष्ट्रवाद का नाटकीय उदाहरण है। सन् 1939 और सन् 1945 के बीच हुए दूसरे विश्वयुद्ध का कारण भी यही मानसिकता थी।

भारत की मानसिकता, भारत की संस्कृति अपने चिर पुरातन से ऐसे राष्ट्रवाद के खिलाफ रही है। हमेशा से यहाँ का संदेश—ज्ञान व प्रेम रहा है। यहाँ कभी भी वसुधा गा में वर्चस्व की स्थापना के प्रयास नहीं किए गए। यहाँ के प्रयत्न तो

हमेशा ही वसुधा में कुटुम्ब की स्थापना के रहे हैं। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' ही यहाँ का जीवनमंत्र रहा है। यहाँ के ज्ञानी ऋषियों ने समस्त देशों, समस्त प्राणियों को ब्राह्मी चेतना से एकाकार माना और अपनी इस अनुभूति को 'सर्व खत्विदं ब्रह्म' कहकर परिभाषित किया। यहाँ के ज्ञान में सभी के लिए प्रेम का उपदेश है और सभी के साथ प्रेम में परम ज्ञान का संदेश है। भारत के जन—गण—मन में यही भाव रचा—बसा होने के कारण भारतवासियों ने आजादी के बाद लोकतंत्र को स्वीकार किया।

लोकतंत्र के सुविचार में भारत व भारतीयता की झलक है। यह पुरातन व नूतन—भारत के चेतन—अचेतन, हर तरह की आकांक्षाओं से जुड़ा हुआ है। इसे सुनकर मन में अनेक स्मृतियां झंकृत हो उठती हैं। इन सबके केन्द्र में अंगरेजों की गुलामी से मुक्ति का भाव सबसे प्रबल होता है। भारत में अंग्रेजों ने व्यापार से शुरू कर जो राज्य स्थापित किया, उसकी पकड़ कई तरह से मजबूत थी। इसके लिए उन्होंने देश कई तरह से कमजोर करने की कोशिश की। आर्थिक शोषण, नागरिक अधिकारों का हनन, शिक्षा का विद्रूपीकरण, भेदभाव और फूट डालकर देश को दुर्बल करने की कोशिश की। जो भारत उन्होंने हमें लौटाया था, वह उस भारत के मुकाबले दीन—हीन था, जब उन्होंने यहाँ पहली बार पदार्पण किया था।

भारत के लिए उनकी नीतियां ऐसी थीं, जिनसे केवल शोषण ही संभव था, जिन्होंने यहाँ की मौजूद कला और कारीगरी की स्थानीय आधार संरचना को बुरी तरह से ध्वस्त किया। देशवासियों में से बहुतों को अंग्रेजी तौर—तरीका, सोच—विचार और ज्ञान—विज्ञान भाने भी लगा। उस पर श्रेष्ठता की मुहर लगाने का कुचक्र भी रचा गया, लेकिन इससे संघर्ष हेतु देशभक्तों की एक समूची पीढ़ी खड़ी हुई और लगभग एक सदी के संघर्ष के बाद स्वतंत्रता की घड़ी, एक मुश्किल घड़ी के रूप में आई।

भारत, अंग्रेजों का उपनिवेश था और जब एक उपनिवेश स्वतंत्र होता है तो एक स्वतंत्र यानी कि परिभाषित करने की और सामाजिक व राष्ट्रीय जीवन को संचालित करने की चुनौती खड़ी होती है। उसके सामने कई विकल्प होते हैं, जिनमें से वह एक चुन सकता है। हर विकल्प की अपनी कीमत होती है और उसे जुड़ा हुआ जोखिम भी होता है, पर जो भी चुनाव होता है, उसके दूरगामी परिणाम होते हैं। हमारी मुसीबत कुछ ज्यादा ही होती गई; क्योंकि हमने सोच—विचार के चौखटे और पैमाने, औपनिवेशक व्यवस्था से ही उधार ले लिए और उनमें हमारा विश्वास भी था; क्योंकि भारतभूमि में वे ही जांचें व परखे गए थे।

कह सकते हैं कि हम उन्हीं में खो से गए थे। जो कुछ भी मिला और जिस रूप में भी मिला, उसे स्वीकार कर लिया और उससे बाहर निकलने की कोशिश भी नहीं की गई। खासतौर पर सामाजिक, शैक्षिक और कानून व्यवस्था के क्षेत्र में हमने अंग्रेजों का मॉडल स्वीकार कर लिया और उसी औपनिवेशिक तंत्र की परिधि में लोकतंत्र का चलाना शुरू किया। देश का झंडा बदल गया, अधिकारी भी बदल गए, पर जो उनकी जगह आए, उनकी नजरों में पुराना ढर्हा ही ठीक था। पद, काम, तौर—तरीके सब कुछ वही है। इसलिए मानसिकता भी वही रही।

हमारे जनप्रतिनिधियों के रूप में चुनकर जो लोग विद्यानास्त्राओं या संसद में पहुंचते हैं, जिनमें से कई मंत्री बनते हैं, उनके भी तौर बदलने में दर नहीं लगती। आज की स्थिति यह है कि कायांतरण तो हुआ, पर भारतीय शरीर में अंग्रेजी आत्मा ने वास स्थानीय आधार संरचना को बुरी

## शेष भाग पृष्ठ क्र.3 का

करना आरंभ कर दिया। आजादी के सात दशक बाद भी इससे छुटकारा नहीं मिल सका। भारतीयता और देशभक्ति को परिभाषित करने वाले विकल्प की तलाश अभी भी बाकी है। स्वाधीन भारत में अभी भी बहुत कुछ स्वाधीन होना शेष है। भारतमाता की जय के नारों के बीच भारतमाता की पहचान करना अभी भी बाकी है।

आखिर ये भारतमाता कहाँ हैं? भारत की मिट्टी, भारत की धरती, भारत के पहाड़ और नदियां, जगल और फैले हुए खेत, यह सब तो भारतमाता का शरीर है, जिनसे हम सब बेहद प्यार करते हैं। ऐसा करना

उचित भी है, लेकिन जिसका महत्व सबसे ज्यादा है, वह है भारत देश की आत्मा। भारतमाता की चेतना सर्वव्यापी है और वह चेतना है—हम सब लोग, वे सभी लोग जो इस विशाल धरती पर चारों ओर फैले हुए हैं। हाँ, भारत की जनता ही भारत की चेतना है। यही भारतमाता है। यही भारत देश की आत्मा है। इनमें से किसी के साथ भेदभाव उचित नहीं है। इनमें से प्रत्येक के साथ आत्मीयता व एकात्मता में ही भारतीयता है।

जब हमें यह अनुभूति होगी, जब हम भारतमाता व भारतीयता को सही ढंग से पहचानेंगे, इसे सही तरीके से परिभाषित करेंगे, तभी हम भारत व

भारतवासियों के लिए सही विकल्प का चयन कर सकेंगे। तभी भारतीय लोकतंत्र कह सही रूप विकसित हो सकेगा। तभी एक ऐसी व्यवस्था विनिर्मित हो सकेगी, जो भारतवासियों के द्वारा भारत देश के लिए बनाई गई हो। जिसमें प्रत्येक भारतीय के लिए महत्वपूर्ण भागीदारी हो। जिसमें राष्ट्रवाद, कठुरता के रूप में नहीं देशभक्ति के रूप में परिभाषित और प्रकाशित हो। जिसमें विरोध और विवाद की प्रक्रिया की अंतिम परिणति संवाद के रूप में हो। जिसमें मतभेद तो पर्याप्त हों, पर मनभेद न हों। हम सभी में अपने देश की प्राकृतिक सुंदरता, मानवविर्मित उपलब्धियों,

## भारत को जगाने हेतु

स्वामी विवेकानन्द का व्यक्तित्व व उनके विचार शाश्वत हैं। उनके विचार आज भी लोगों के मन को जाग्रत करने के लिए प्रेरणास्रोत हैं। उन्होंने भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्वों को एवं वेदों व उपनिषदों के ज्ञान को जनसामान्य के लिए इस तरह प्रस्तुत किया कि आज उनके वही विचार लोगों के लिए अनिमंत्र बन गए हैं।

**'उत्तिष्ठत, जाग्रत प्राप्य बरान्निबोधत'**—अर्थात् उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक कि लक्ष्य पूरा न हो जाए।— उपनिषदों से निकले इस श्लोक को स्वामी विवेकानन्द ने बहुत लोकप्रिय बनाया। यह मन्त्र उन सभी भारतीयों विशेषकर युवाओं के लिए प्रेरणा का महामंत्र है, जिन्हें शिक्षा—अर्जन के उपरांत नए कार्यों के माध्यम से एक नए भारत का निर्माण करना है।

मिशिगन विश्वविद्यालय में पत्रकारों के एक समूह से स्वामी विवेकानन्द ने एक बार यह कहा था कि 'फिलहाल यह आपकी सदी है लेकिन 21वीं सदी भारत की होगी।' शंकातु और निराशावादी स्वभाव के लोग आज भी इस बात पर संदेह कर सकते हैं कि क्या भारत सभी वर्जनाओं से ऊपर उठकर दुनिया की एक प्रमुख अर्थव्यवस्था बन पाएगा, लेकिन वृद्धि के मौजूद रूझानों से ऐसी उम्मीद की कई किरणें नजर आती हैं।

विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और अन्य कई तरह की वैश्विक एजेंसियों का यह कहना है कि भारत विकास की सही दिशा में अग्रसर है। हालांकि इसमें कई तरह की बाधाएं और चुनौतियां भारत के सामने अभी भी हैं, जिनका उसे सामना करना है, कई तरह के पूर्वाग्रहों से निपटना है और सही विचारधारा को अपनाना है।

नए भारत की बुनियाद को मजबूत बनाने के लिए यहाँ सामाजिक सौहार्द, शांतिपूर्ण समावेशन के साथ

स्वामी विवेकानन्द का व्यक्तित्व व उनके विचार शाश्वत हैं। उनके विचार आज भी लोगों के मन को जाग्रत करने के लिए प्रेरणास्रोत हैं। उन्होंने भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्वों को एवं वेदों व उपनिषदों के ज्ञान को जनसामान्य के लिए इस तरह प्रस्तुत किया कि आज उनके वही विचार लोगों के लिए अनिमंत्र बन गए हैं।

**'उत्तिष्ठत, जाग्रत प्राप्य बरान्निबोधत'**—अर्थात् उठो, जागो और तब तक तक मत रुको, जब तक कि लक्ष्य पूरा न हो जाए।— उपनिषदों से निकले इस श्लोक को स्वामी विवेकानन्द ने बहुत लोकप्रिय बनाया। यह मन्त्र उन सभी भारतीयों विशेषकर युवाओं के लिए प्रेरणा का महामंत्र है, जिन्हें शिक्षा—अर्जन के उपरांत नए कार्यों के माध्यम से एक नए भारत का निर्माण करना है।

मिशिगन विश्वविद्यालय में पत्रकारों के एक समूह से स्वामी विवेकानन्द ने एक बार यह कहा था कि 'फिलहाल यह आपकी सदी है लेकिन 21वीं सदी भारत की होगी।' शंकातु और निराशावादी स्वभाव के लोग आज भी इस बात पर संदेह कर सकते हैं कि क्या भारत सभी वर्जनाओं से ऊपर उठकर दुनिया की एक प्रमुख अर्थव्यवस्था बन पाएगा, लेकिन वृद्धि के मौजूद रूझानों से ऐसी उम्मीद की कई किरणें नजर आती हैं।

विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और अन्य कई तरह की वैश्विक एजेंसियों का यह कहना है कि भारत विकास की सही दिशा में अग्रसर है। हालांकि इसमें कई तरह की बाधाएं और चुनौतियां भारत के सामने अभी भी हैं, जिनका उसे सामना करना है, कई तरह के पूर्वाग्रहों से निपटना है और सही विचारधारा को अपनाना है।

नए भारत की बुनियाद को मजबूत बनाने के लिए यहाँ सामाजिक सौहार्द, शांतिपूर्ण समावेशन के साथ

## स्वामी विवेकानन्द की पुकार

सार्वभौमिक सहिष्णुता में विश्वास करते हैं, अपितु सभी धर्मों को मूल रूप से स्वीकार भी करते हैं। मुझे अपने देश पर भी गर्व है, जिसने सभी धर्मों और सभी देशों के लोगों को शरण दी।' इसके साथ उन्होंने यह भी कहा था कि 'यह ख्यूबसूरत धरती लंबे समय से तमाम खाचों में बंटे समाज, धर्मादाता और उसके खतरनाक प्रभावों से बदसूरत होती जा रही है। इसकी वजह से हिंसा बढ़ी और कई बार खूनखराबे तक की नौबत आई। जिसने इसानी सभ्यता को नष्ट किया और जिसकी चपेट में लगभग सभी देश आए। अगर यह धर्माधाता का दानव नहीं होता, तो आज मानव समाज कहीं अधिक विकसित होता।' धार्मिक एकता की साझा जमीन के संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि किसी एक धर्म द्वारा दूसरे धर्म पर जीत हासिल करने के बाद शांति और एकता की उम्मीद करना थे—मानी है। उनसे मैं यही कहंगा कि 'बंधु, आप एक असंभव उम्मीद पाले हुए हैं।'

आज भारत की भाँति दुनिया का कोई और देश ऐसा नहीं है, जो युवाओं की इतनी बड़ी आबादी के साथ तरक्की की राह पर तेज गति से अग्रसर है। स्वामी विवेकानन्द ने व्यक्ति एवं चरित्र निर्माण का उल्लेख करते हुए यह कहा था कि 'व्यक्ति निर्माण ही मेरे जीवन का लक्ष्य है, मैं न तो कोई नेता हूँ और न ही समाज सुधारक। मेरा काम ही व्यक्ति और चरित्र निर्माण का है।' स्वामी विवेकानन्द यह चाहते थे कि शिक्षा का उद्देश्य ही जीवन निर्माण, व्यक्ति निर्माण और चरित्र निर्माण होना चाहिए। हमें ऐसे ज्ञानी, कुशल और सही दृष्टिकोण वाले पुरुषों व महिलाओं की जरूरत है, जो सामाजिक कायाकल्प को रपतार दे सकें, उसकी गति तीव्र कर सकें।

स्वामी विवेकानन्द जाति और

उसके इतिहास व संस्कृति से भरपूर प्यार हो, पर हममें से किसी के मन में एक दूसरे को सताने का कोई भी भाव न हो। हमारा यह प्यार किसी भी सीमा पर जाकर न रुके और न थमे। भाषा, जाति, धर्म, क्षेत्र की कोई सीमा इसे न रोक सके। इसके सभी निवासी सच्चे अर्थों में भारतीय हों और देश व विश्व में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें। हममें से प्रत्येक के लिए भारतीयता—मानवीयता का परिचय व पर्याप्त हो और हमारा लोकतंत्र इसका सच्चा संवाहक हो सके।

नस्ल से परे मानवता के उत्थान में विश्वास रखते थे। मानवता की प्रगति और अस्तित्व के लिए उन्होंने अध्यात्म की अहमियत पर बल दिया। वह सिद्ध आध्यात्मिक उपदेशक थे, जिन्होंने पश्चिमी दुनिया को भी 'योग और वेदात्' से परिवर्तित कराया। स्वामी विवेकानन्द पश्चिम और पुरब के बीच एक सेतु की तरह रहे, जिन्होंने मानवता की आध्यात्मिक आधारशिला को सशक्त बनाने में अपना अतुलनीय योगदान दिया।

हमारे देश की युवा पीढ़ी को उनके आदर्शों का अनुसरण करना चाहिए, उनके विचारों को बार-बार पढ़ना चाहिए और उन्हें आत्मसात् करना चाहिए। उनके विचार अग्निमंत्र कहे जाते हैं और उन्हें पढ़ने वालों व उन पर चिंतन करने वाले लोगों के आत्मविश्वास को जबरदस्त ढंग से बढ़ाते हैं।

स्वामी विवेकानन्द एक महान राष्ट्रनिर्माता थे। देश की प्रगति में अवरोध पैदा करने वाले कुछ शाराती तत्त्वों द्वारा कुत्सित प्रयासों के दौर में उनकी शिक्षाएं अधिक समीचीन हैं। हम भारतीय हमेशा से ही 'सर्वधर्म सम्भाव' में विश्वास करने वाले और सदैव शांति एवं सौहार्द की कामना करने वाले रहे हैं। शांतिपूर्ण सहास्तित्व ही सदैव से हमारा मूलमत्र रहा है, ऐसे में हमें अपनी समृद्ध सभ्यता की विशेषताओं को स्मरण कर उसे पुनर्जीवित करना होगा। देश के नागरिकों को अपने गौरवशाली इतिहास का स्मरण करते हुए, श्रेष्ठ विचारों को अपनाते हुए आगे बढ़ना होगा।

## सूचना

कृपया आप अपनी प्रतिक्रिया और सुझाव महाकोशल संदेश के ई-मेल एवं व्हाट्सअप नं. 9713223539 भेजें।

—सम्पादक